॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : १२ मार्च २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - १२, मार्च, २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. व्याप्त व्यक्तित्व : अखंड कृतित्व: ऋषभदेव एवं अष्टापद	डॉ. लता बोथरा	५७७

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

व्याप्त व्यक्तित्व : अखंड कृतित्व

ऋषभदेव एवं अष्टापद

प्रो. हाजिमे नाकामुरा (जापान के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता) लिखते हैं कि बौद्ध धार्मिक ग्रन्थों के चीनी भाषा में जो रूपांतरित संस्करण उपलब्ध है, उनमें यत्र तत्र जैनों के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के विषय में उल्लेख मिलते हैं—भगवान् ऋषभदेव के व्यक्तित्व से जापानी भी अपरिचित नहीं है। जापानी ऋषभदेव को रीकशब कहकर पहचानते हैं। ऋषभदेव ने भारत के बाहर भी अपने धर्म का प्रचार किया था।

त्रिशास्त्र संप्रदाय के संस्थापक श्री चित्संग (५४९-६३३ ई.) **तैशोत्रिपिटक (भा० ३३ पृ० १६८)** के उद्धरण की विवेचना करते हुए लिखते हैं— "ऋषभ एक तपस्वी ऋषि हैं। उनका उपदेश है कि हमारे शरीर को सुख और दुख का अनुभव पूर्व संचित कर्मों के कारण प्राप्त होता है। इस जीवन में तपस्या द्वारा (संचित कर्म) समाप्त हो जाता है तो सुख तुरन्त प्रकट होता है। उनके धर्मग्रन्थ **निर्ग्रन्थ** (सूत्र) नाम से प्रसिद्ध हैं, और उनमें हजारों कारिकायें हैं।" षट्शास्त्र में उल्लिखित कपिल, उलूक आदि ऋषियों के बारे में अपना मन्तव्य व्यक्त करते हुए श्री चित्संग ने लिखा है – "उन सब ऋषियों के मत ऋषभदेव के धर्म की शाखाएँ है।"

चीन में जैनधर्म का प्रभाव देखने मिलता है। चीनी विद्वान भगवान् ऋषभदेव से अनभिज्ञ नहीं थे। प्रो. नाकामुरा ने बताया है कि चीनी भाषा के षट्शास्त्र (अ.१) में ऋषभदेव को भगवत् कहा गया है। उसमें लिखा है कि भगवान् ऋषभदेव के शिष्यगण निर्ग्रन्थों के (जैनियों के) धर्मग्रन्थों का पाठ करते थे। चित्संग ने

स्वर्ण सप्तति टीका में ऋषभ द्वारा मान्य तर्कवाद का भी उल्लेख किया है। (अहिंसा वाणी तीर्थं ऋषभदेव विशेषांक, पृ. १६)

अध्यापक आर. जी. हर्षे ने अलासिया (साइप्रस) से प्राप्त ई. पू० १२वीं शती की **रेशेफ मूर्ति** पर गवेषणात्मक लेख लिखकर सिद्ध किया है कि **रेशेफ** भारतीय ऋषि का ही नाम है। फणिक लोगों की भाषा में **रेशेफ** का अर्थ होता है, सींगोंवाला देवता और संस्कृत में ऋषभ या वृषभ का अर्थ है, बैल। उक्त मूर्ति के सींग बैलों जैसे हैं। इसलिए रेशेफ और ऋषभ अभिन्न प्रकट होते हैं। ऋषभ का चिन्ह भी बैल है। फणिक लोग जिनेन्द्र भक्त थे। वे लोग (Bull God) बैलदेवता कहकर ऋषभदेव की पूजा करते थे।

कालिदास नाग जो एक प्रख्यात् दर्शन शास्त्री थे उन्होंने मध्य एशिया से प्राप्त एक नग्न मूर्ति का चित्र अपनी पुस्तक में दिया है, जो लगभग दस हजार वर्ष पुराना है। उन्होंने उसे जैनमूर्ति के अनुरूप बताया है। यह मूर्ति नग्न है, कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं। उसकी जटायें कंधों पर ठीक वैसे ही लहराती हुई दर्शायी गई है, जैसे कि जिन मूर्तियों में होती है। यूनान में भी अपोलो रेशेफ की मूर्ति नग्न बनती थी। अपोलो सूर्य देवता है। भगवान ऋषभ केवलज्ञानी थे अतः ज्ञान के सूर्य कहे जाते थे। (डिस्कवरी आफ एशिया प्लेट नं. ५, आदि तीर्थंकर भग. ऋषभ पृ. १४७)

बेबीलोनिया का **इसबेजूर** नगर ऋषभपुर का अपभ्रष्ट रूप प्रतीत होता है। वहां तेशेव (ऋषभ) देव की मूर्ति विद्यमान है। तेशवदेव के रूप में भगवान् ऋषभ की मान्यता मध्य एशिया से लेकर सोवियत अरमेनिया तक फैली थी। तेशब शब्द, तित्थयर उसभ अथवा घोर उसभ का अपभ्रष्ट रूप हो सकता है। प्राचीनकाल में कश्यपों, देवों, मानवों, मिश्रवासियों और मगों में एक ही प्रकार की चित्रमय भाषा लिपि प्रचलित थी। एक अलंकृत भाषा का प्रयोग होता था।

(इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली भाग ३, पृ. ३९)

यहूदियों के धार्मिक ग्रन्थों में ऋषभदेव का वर्णन मिलता है। "Some Old Testamen passages indicate.......Among the pre-Israelitish inhabitants of the Nageb were the son of Anakor Anakite and that these Anakites were identical with or closely related to the Rephain or Rephaite (रिषभ)" (History of Israel pg. 7).

प्रो. वी. जी नायर जो शान्तिनिकेतन से जुड़े थे और सिनोइण्डियन कल्चर सोसाइटी के सह सचिव रहे है उन्होंने एशिया की संस्कृतिं के ऊपर करीब पच्चीस किताबें और दो हजार लेख लिखे हैं। उनके अनुसार "After my continuous studies on the origin and development of world culture, I was convinced that Lord Rishabha was the first religious teacher, ruler, reformer as well as law maker in the history of Mankind....... Rishabha is also extolled in the Vedas as the Almighty God. There are devotional hymns in the Vedas as well as in some Puranas in adoration of Rishabha. In the Buddhist scriptures also could be found references about Rishabha as the early Buddha. The author of TIRUKKURAL, the Tamil Veda extols Rishabha as Adi Bhagawan, the first Lord and the first omniscient teacher of mankind. (Adi Bhagawan Rishabh)"

ऋषभदेव का वर्णन जैन साहित्यिक ग्रन्थों कल्पसूत्र, आवश्यक सूत्र, आचारांग निर्युक्ति, आवश्यक निर्युक्ति, आदिपुराण, हरिवंशपुराण, पउमचरिउ, (विमलसूरि कृत–प्रथम शताब्दी सन्) त्रिशष्टि शलाका पुरुष चरित्र, शत्रुंजय महात्म्य, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, तिलोयपण्णति, वसुदेव हिंडी और उत्तर पुराण आदि अनेक ग्रन्थों

में मिलता है। ऋषभदेव का जन्म अन्तिम कुलकर नाभि राजा और उनकी पत्नी मरुदेवी से अयोध्या में हुआ था। ऋषभदेव के पिता नाभि १४ कुलकरों में अन्तिम कुलकर थे। उनकी मां का नाम मरुदेवी था। ऋषभदेव मानवीय संस्कृति के आदि सूत्रधार थे। उन्होंने अपने चारों ओर के वन्य समाज को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, शिक्षा और रक्षण की विधि सिखाकर ग्राम तथा नगर समाज के रूप में संगठित कर उन्हें कला कौशल का प्रशिक्षण देकर संस्कृति और सभ्यता का प्रारम्भ किया था। प्राकृतिक अवरोध के कारण कल्पवृक्षों से जब भोजनादि की व्यवस्था निःशेष प्रायः हो गई थी तब भगवान् ने प्रजा को कृषि की शिक्षा दी। कृषि का अर्थ है—**कृषिः भूकर्षणे प्रोक्तः।** पृथ्वी विलेखन को कृषि कहते हैं। कृषि से अन्नादि पैदा होते हैं। इसलिये अन्न, चारा, वस्त्र, ईंधन तथा लकड़ी द्वारा निर्मित जीवनोपयोगी नाव, जहाज, मकान, हाट, हल आदि सब सामग्रियां खेती से प्राप्त करना सिखलाई। प्राण रक्षा के लिए उपयोगी साधन सामग्री का निर्माण करना भी सिखलाया। अतः वे खेती के प्रथम आविष्कर्ता थे। ऋषभदेव ने केवल हल और बैल के द्वारा खेती करना ही नहीं सिखाया अपितु उत्पन्न अन्न से भोजन तैयार करने तथा खाने की विधि भी बताई। उन्होंने पशुपालन भी सिखलाया। दुधारु पशुओं को पालकर उनके चारे से पालन पोषण कर दूध प्राप्त करना भी सिखलाये तथा दूध से दही आदि मिष्टान्न तैयार करना भी सिखलाया। भोजन बनाने के लिये पात्र बनाने भी लिखलाये। अतः कोई भी व्यक्ति वस्त्र, पात्र, भोजन, मकान आदि के अभाव से पीड़ित न रहा।

ऋषभदेव ने लिपि और गणित की शिक्षा अपनी ब्राह्मी, सुन्दरी दोनों पुत्रियों को दी। ब्राह्मी को भाषा और लिपि का मुख्यरूप से ज्ञान कराया। (अथश्री ऋषभदेवेन ब्राह्मी दक्षिण

हस्तेन अष्टादशलियों दर्शिताः।) उसी के नाम पर भारत की प्राचीन लिपि को ब्राह्मी लिपि कहते हैं। भाषाविज्ञान वेत्ताओं का कथन है कि ब्राह्मी लिपि पूर्ण और सर्वग्राह्य थी। आगे चलकर इस लिपि से अनेक लिपियों का विकास हुआ। आज की देवनागरी लिपि उसी का विकसित रूप है।

ऋषभदेव ने अपनी दूसरी पुत्री सुन्दरी को मुख्यरूप से अंकों का ज्ञान करवाया। उससे गणित विद्या का विकास समूचे जगत में प्रसार हुआ। जगद्गुरु ऋषभदेव ने पुरुषों को ७२ कलाएं और स्त्रियों को ६४ कलाएं सिखलाई। उन्होंने एक सुनियोजित व्यवस्थारूप में प्रजाजनों को अनुशासित किया। उन्होंने कर्म के आधार पर समाज का वर्गीकरण किया। वे चतुर्वर्णी (क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, और ब्राह्मण) व्यवस्था के सूत्रधार बने। चाणक्य की अर्थनीति में जिस चतुर्वर्ण व्यवस्था पर अधिकाधिक बल दिया गया है, वह ऋषभदेव से प्रारंभ हो चुकी थी। नयी संस्कृति, नयी सभ्यता और नयी राजव्यवस्था के जनक के रूप में उन्हें प्रजापति, मनुं, कुलकर और ब्रह्मा कहा गया। शैव धर्म में शिव, वैष्णव धर्म में विष्णु के अवतार के रूप में ऋषभदेव की मान्यता रही है। आद्य प्रचारक ऋषभदेव ने जहाँ कर्मयुग की नींव डाली, वहीं धर्मयुग की भी आधारशिला रखी थी। वे ब्राह्मण धर्म और श्रमण धर्म के समन्वय बिन्दु थे। **"तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव मूलतः वैदिक परम्परा के प्रतिष्ठित प्रागैतिहासिक शलाकापुरुष हैं। उनकी तीर्थयात्रा की पदचाप ब्राह्मण परम्परा से श्रमण-परम्परा तक समभाव से अनुगूँजित है। जैन परम्परा ऋषभदेव से ही अपने धर्म का उद्भव मानती है। वैदिक साहित्य के तहत ऋग्वेद में जिस ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है, वहीं जैन धर्म के ऋषभनाथ हैं।"** (श्री रंजन सूरि देव)

हिन्दू साहित्य में ब्रह्मा को अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है हिरण्यगर्भ, प्रजापति, लोकेश, नाभिज, चतुरानन, सृष्टा और स्वयंभू आदि जिनका साम्य ऋषभदेव के चरित्र से भी मिलता है।

हिरण्यगर्भ– जब भगवान ऋषभदेव माता मरुदेवी के गर्भ में आये उसके छः मास पहले से अयोध्या नगर में हिरण्य, सुवर्ण तथा रत्नों की वर्षा होने लगी। इसलिए आपका हिरण्यगर्भ भी नाम पड़ा।

प्रजापति– कल्पवृक्षों के नष्ट हो जाने पर असि, मसि, कृषि, आदि छः कर्मों का उपदेश देकर उन्होंने प्रजा की रक्षा की थी। इसलिये आप प्रजापति कहलाये।

लोकेश– ऋषभदेव समस्त लोक के स्वामी थे इस अवसर्पिणी काल के प्रथम राजा थे। इसीलिए लोकेश कहलाते थे।

नाभिज– चौदहवें मनु नाभि राजा के पुत्र थे इसलिये नाभिज नाभि से उत्पन्न / के द्वारा जन्म प्राप्त कहलाये।

चतुरानन– समवसरण में चारों ओर से आपका दर्शन होता था इसलिये आप चतुरानन कहे जाते थे।

सृष्टा– भोग भूमि नष्ट होने के बाद देश, नगर, राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, घर-परिवार, विवाह प्रथा आदि सभी परम्पराओं के आदि प्रवर्तक थे। इसलिये आप स्रष्टा कहे जाते थे।

स्वयंभू– दर्शन-विशुद्धि आदि भावनाओं से अपनी आत्मा के गुणों का विकास कर स्वयं ही आदि तीर्थंकर हुए थे इसलिये स्वयंभू कहलाते हैं।

इस प्रकार जैन परम्परा के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव प्रथम योगी थे जिन्होंने ध्यान पद्धति का प्रारम्भ किया था। श्रीमद् भागवत में उन्हें योगेश्वर कहा गया है। महाभारत में हिरण्यगर्भ को

सबसे प्राचीन योगवेत्ता माना गया है। जैन परम्परा के ऋषभदेव ही अन्य परम्पराओं में आदिनाथ, हिरण्यगर्भ, ब्रह्मा एवं शिव के नाम से प्रचलित है। ऋग्वेद के अनुसार हिरण्यगर्भ को भूत जगत का एकमात्र स्वामी माना गया है। सायण के अनुसार हिरण्यगर्भ देहधारी था। ऋषभदेव जब गर्भ में थे तब राज्य में धनधान्य की वृद्धि हुई इसीलिये उन्हें हिरण्यगर्भ भी कहा जाता है। महापुराण में भी इस बात का उल्लेख मिलता है।

आगम और ऋग्वेद के व्युत्पत्ति जन्य अर्थ में अद्‌भुत साम्य देखने को मिलता है। जो इस प्रकार हैं। 'ऋ' का अर्थ है प्राप्त करना या सौंपना। 'क्' अक्षर का एक अर्थ है शिव, विष्णु, ब्रह्मा (सत्यम शिवम सुन्दरम) के रूप में भी मिलता है। और वेद का अर्थ है ज्ञान। अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव (ऋषभदेव) से आया (प्राप्त) ज्ञान। आगम में – 'आ' का अर्थ है 'आया हुआ', 'अधिग्रहण'। 'ग' से गणधर। 'म' का प्रयोग ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों के सम्मिलित रूप में होता है और ऋषभदेव के रूप में तीनों समाहित है। अतएव आगम का अर्थ हुआ ऋषभदेव से गणधरों को आया हुआ रहस्यमय ज्ञान या गणधरों द्वारा ग्रहण किया गया रहस्यमय ज्ञान। संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर (रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित नागरी प्रचारणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित) के पृष्ठ ८१ में आगम का अर्थ वेद, शास्त्र, तन्त्र शास्त्र और नीति शास्त्र दिया हुआ है। इससे यह पता चलता है कि आगम साहित्य वैदिक साहित्य से भी विशाल था। "तन्त्र अभिनव विनिश्चय" (शैव आगमों का प्रमुख ग्रन्थ) में लिखा है कि तंत्र के आदि सृष्टा शिव थे। जिन्होंने आगम के रूप में वह ज्ञान पार्वती को दिया और पार्वती ने लोक कल्याण के लिये वह ज्ञान गणधरों को निगम के रूप में दिया। यह धारणा इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि आदि

एक है लेकिन विभिन्न लोगों ने अलग अलग दृष्टिकोण से उसकी व्याख्या की है। "एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्त्यग्निम् यमः मातरिश्वानम् आहुः।" अतः मूल ज्ञान का स्रोत आगम थे और उसी का परिवर्तित रूप निगम बना। पार्वती शब्द का अर्थ पर्वत में रहने वाले लोग से भी होता है। जिनको पारवतीय कहकर सम्बोधित किया गया है। इस रहस्यमय आगम ज्ञान को सिर्फ भारत में ही नहीं यूरोप में भी कैसे नष्ट किया गया इसका एक उदाहरण यहां पर दिया जा रहा है। Godfrey Higgins ने अपने ग्रन्थ "The Celtic Druids" में इस विषय में लिखा है — "After the introduction of Christianity the Ogam writings, not being understood by the priests, were believed to be magical and were destroyed wherever they were found. Patrick is said to have burnt 300 books in those letters."

"The word Agams or Ogam is mysterious" according to Sri William Jones "These Ogham Character" were the first invented letters........... the Druids of Ireland did not pretend to be the inventors of the secret system of letters but said that they inherited them from the most remote antiquity."

प्रख्यात घुमक्कड़, परिव्राजक, प्राचीन तंत्रशास्त्र के ज्ञाता एवं शैवागम के विशेषज्ञ विद्वान श्री प्रमोदकुमार चटर्जी का कहना है— "तन्त्र धर्म भारत के बाहर से आया हुआ है। शिव तिब्बत के पार्वत्य अंचल में रहा करते थे।............ जिन लोगों ने तिब्बत के भौगोलिक मानचित्र को देखा है, वे देखेंगे कि उस देश के दक्षिण पश्चिम अंश में कैलाश पर्वत श्रेणी विद्यमान है। लगभग चार हजार

या उससे भी कई शताब्दियों पहले एक महापुरुष उस अंचल में विद्यमान थे।

तिब्बत के कैलाश अंचल में जिस महामानव ने आदि धर्म का प्रवर्तन किया था, वे अशेष गुणसम्पन्न योगी थे—योगेश्वर के रूप में ही उनकी प्रसिद्धि थी। ये कभी योगभ्रष्ट नहीं हुए। उनसे ही समाज का सविशेष विकास हुआ है।"

स्पष्टतः प्रमोद चटर्जी यहाँ ऋषभदेव, आदिनाथ या शिव की तरफ इशारा करते हैं।

ब्रह्मा द्वारा वेदों की उत्पत्ति की मान्यता श्रमण संस्कृति की इस मान्यता से और भी पुष्ट होती है कि मूल वेदों की रचना भरत चक्रवर्ती द्वारा अपने पिता ऋषभदेव के उपदेशों को सूत्रबद्ध करके की गयी थी। बाद में वेद जब विच्छिन्न होने लगे तब उनमें भौतिक कामनाओं की पूर्ति के लिये हिंसक बलि, यज्ञ और शक्तिशाली देवताओं को प्रसन्न करने की स्तुतियाँ परवर्ती भाष्यकारों ने जोड़ दी। निवृत्ति धर्म को गौणकर प्रवृत्ति धर्म का प्रभाव बढ़ने लगा था। तत्पश्चात् व्यास जी ने इन ऋचाओं को संकलित कर उनके चार नाम से चार वेद बना दिये। प्राचीन काल में वेद जैन संस्कृति में भी मान्य रहे है। इसका प्रमाण आचारांग सूत्र से भी मिलता है। जहाँ कई स्थानों पर वेदवी शब्द का प्रयोग हुआ है जो गहन अनुसंधान का विषय है।

"एवं से अप्पमाएण विवेगं कीट्टति वेदवी"

(आचारांग सूत्र श्रुत १ अ. ४ उ. ४)

"एत्थ विरमेज्ज वेदवी"

(आचारांग सूत्र श्रुत १ अ. ५ उ. ६)

भगवान महावीर द्वारा प्रथम समवसरण के समय गौतम आदि गणधरों के वैदिक श्रुतियों के विषय में संदेह का स्पष्टीकरण

और उन श्रुतियों की सही व्याख्या करना इस मान्यता को और भी पुष्ट करता है कि प्राचीन काल में वेद जैनियों के मान्य ग्रन्थ थे। पारसी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता में प्राचीन वेदों का वर्णन मिलता है। विद, विश्वरद, विराद और अंगिरस। ये वेद खरोष्टि लिपि में लिपिबद्ध थे।

गोपथ ब्राह्मण (पूर्व २-२०) में स्वयंभू कश्यप का वर्णन मिलता है जो ऋषभदेव हैं। भागवत में और विष्णु पुराण में ऋषभदेव को विष्णु का अवतार बताया गया है। विष्णु शब्द में विष का अर्थ- प्रवेश करना तथा अश् का अर्थ— व्याप्त करना धातु से किया गया है। विष्णु पुराण में भी विष धातु का अर्थ प्रवेश करना है, सम्पूर्ण विश्व उस परमात्मा में व्याप्त है। ऋग्वेद में विष्णु को सौर देवता कहा है और वे सूर्य के रूप है। आचार्य यास्क के अनुसार रश्मियों द्वारा समग्र संसार को व्याप्त करने के कारण ही सूर्य विष्णु नाम से अभिहित हुए है। ब्रह्म पुराण (१५८/२४) "यश्च सूर्यः स वै विष्णुः स भास्करः" । हमने प्रारम्भ में ही यह प्रमाणित किया है कि वेदों और पुराणों आदि ग्रन्थों में ऋषभदेव और सूर्य की समानता का उल्लेख मिलता है। जो विष्णु और सूर्य – ऋषभ और सूर्य दोनों की समानता की पुष्टि करता है। अर्हत् ऋषभदेव ने लोक और परलोक के आदर्श प्रस्तुत किये। गृहस्थधर्म और मुनिधर्म दोनों का स्वयं आचरण करते हुए राज्यावस्था में विश्व को सर्वकलाओं का प्रशिक्षण दिया तथा बाद में पुत्रों को राज्य भार सौंपकर अध्यात्मकला द्वारा स्व-पर कल्याण के लिये प्रव्रज्या ग्रहण कर अर्हत् बने। शायद यही कारण है कि श्रीमद्‌भागवत में उन्हें विष्णु भगवान् कहा है।

महर्षिःतस्मिन्नैव विष्णुदत्तः भगवान परमर्षिभिः प्रसादितः नाभेः प्रिवचिकीर्षया तदवरोधाय ने मरुदेव्याधमान् दर्शयितुकामो

वातरशनानां श्रमणः नामृषीणामूर्ध्वमंथिनां शुक्लया तनुवावतार।।
(५।३।२० भागवत)।

अर्थात् — हे परीक्षित! उस यज्ञ में महर्षियों द्वारा इस प्रकार प्रसन्न किये जाने पर भगवान् महाराज विष्णु नाभि का प्रिय करने के लिये उनके अन्तःपुर में महारानी मरुदेवी के गर्भ से वातरशना (योगियों) श्रमणों और उर्ध्वगामी मुनियों का धर्म प्रकट करने के लिये शुद्ध सत्वमय शरीर से प्रकट हुए।

श्रीमद्भागवतकार ने ही लिखा है कि यद्यपि ऋषभदेव परमानन्दस्वरूप थे, स्वयं भगवान् थे फिर भी उन्होंने गृहस्थाश्रम में नियमित आचरण किया। उनका यह आचरण मोक्षसंहिता के विपरीतवत लगता है, किन्तु वैसा था नहीं । यथा —

भगवान् ऋषभसंज्ञ आत्मतन्त्रः स्वयं नित्यनिवृत्तानर्थपरम्परः केवलानन्दानुभवः ईश्वर एवं विपरीतवत् कर्मारण्यारभ्यमानः कालेनानुरातं धर्ममाचरेणापंशिक्षयन्नतद्विदां सम उपशांतो मैत्रः कारुणिको धर्मार्थ यशः प्रजानन्दामृतावरोधेन गृहेषु लोक नियमयत्। (भागवत् ५।४।१४)

अर्थात् — भगवान् ऋषभदेव यद्यपि परम स्वतंत्र होने के कारण स्वयं सर्वदा ही सब प्रकार की अनर्थ परम्परा से रहित केवल आनन्दानुरूप स्वरूप और साक्षात् ईश्वर ही थे तो भी विपरीतवत् प्रतीत होने वाले कर्म करते हुए उन्होंने काल के अनुसार धर्म का आचरण करके उसका सत्व न जानने वालों को उसी की शिक्षा दी। साथ ही सम (मैंत्री) शांत (माध्यस्थ) सहृद (प्रमोद) और कारुणिक (कृपापरत्व) रहकर धर्म, अर्थ, यश, सन्तानरूप भोग सुख तथा मोक्ष सुख का अनुभव करते हुए गृहस्थाश्रम में लोगों को नियमित किया।

ऋषभ का एक अर्थ धर्म भी है। ऋषभदेव साक्षात् धर्म ही थे। उन्होंने भागवत में कहा है—मेरा यह शरीर दुर्विभाव है, मेरे हृदय में सत्व का निवास है वहीं धर्म की स्थिति है। मैंने धर्म स्वरूप होकर अधर्म को पीछे धकेल दिया है अतएव मुझे आर्य लोग ऋषभ कहते हैं।

इदं शरीरं मम दुर्विभाव्यं, सत्त्वं ही में हृदयं यत्र धर्मः।
पुष्टे कृतो मे यदधर्म आराधतो ही मां ऋषभं प्राहुरार्याः।।
(भागवत ५।५।२२)

एक अन्य स्थान पर परीक्षित ने कहा है—हे धर्मतत्त्व को जानने वाले ऋषभदेव! आप धर्म का उपदेश कर रहें हैं। अवश्य ही आप वृषभरूप में स्वयं धर्म हैं। अधर्म करने वाले को जो नरकादि स्थान प्राप्त होते हैं, वे ही आपकी निन्दा करने वाले को मिलते हैं। यथा—

धर्मबृवीषी धर्मज्ञ धर्मोसि वृषभ रूप धृक्।
यदधर्मकृतः स्थानं सूचकस्यापि तद्भवेत।। (भागवत १।११।२२)

भगवान् ने धर्म का उपदेश दिया क्योंकि वे स्वयं धर्मरूप थे। तीर्थ का प्रवर्तन किया क्योंकि वे स्वयं तीर्थंकर थे, यह सब कुछ सत्य है किन्तु उन्होंने प्रजा को संसार में जीने का उपाय भी बताया। (मध्य एशिया और पंजाब में जैन धर्म)।

"अश्वघोष के बुद्धचरित में शिव का 'वृषध्वज' तथा 'भव' के रूप में उल्लेख हुआ है, भारतीय नाट्यशास्त्र में शिव को 'परमेश्वर' कहा गया है। उनकी 'त्रिनेत्र' 'वृषांक' तथा 'नटराज' उपाधियों की चर्चा है। वे नृंत्यकला के महान् आचार्य हैं और उन्होंने ही नाट्यकला को ताण्डव दिया। वह इस समय तक महान् योगाचार्य के रूप में ख्यात हो चुके थे तथा इसमें कहा गया है कि उन्होंने ही भरतपुत्रों को सिद्धि सिखाई। अन्त

में शिव के त्रिपुरध्वंस का भी उल्लेख किया गया है और बताया गया है कि ब्रह्मा के आदेश से भरत ने 'त्रिपुरदाह' नामक एक डिम (रूपक का एक प्रकार) भी रचा था और भगवान शिव के समक्ष उसका अभिनय हुआ था। जैन ग्रन्थों में वर्णित अप्सरा नीलांजना का ऋषभदेव की राज्यसभा में नृत्य का प्रसंग उपरोक्त वर्णन से समानता दर्शाता है।"

"पुराणों में शिव का पद बड़ा ही महत्वपूर्ण हो गया है। यहाँ वह दार्शनिकों के ब्रह्मा हैं, आत्मा हैं, असीम हैं और शाश्वत हैं। वह एक आदि पुरुष हैं, परम सत्य हैं तथा उपनिषदों एवं वेदान्त में उनकी ही महिमा का गान किया गया। बुद्धिमान और मोक्षाभिलाषी इन्हीं का ध्यान करते हैं। वह सर्व हैं, विश्वव्यापी हैं, चराचर के स्वामी हैं तथा समस्त प्राणियों में आत्मरूप से बसते हैं। वह एक स्वयंभू हैं तथा विश्व का सृजन, पालन एवं संहार करने के कारण तीन रूप धारण करते हैं। उन्हें महायोगी, तथा योगविद्या का प्रमुख माना जाता है। सौर तथा वायु पुराण में शिव की एक विशेष योगिक उपासना विधि का नाम 'माहेश्वर योग' है। इन्हें इस रूप में 'यंती', 'आत्म-संयमी ब्रह्मचारी' तथा 'ऊर्ध्वरेताः' भी कहा गया है। शिवपुराण में शिव का आदि तीर्थंकर वृषभदेव के रूप में अवतार लेने का उल्लेख है। प्रभासपुराण में भी ऐसा ही उल्लेख उपलब्ध होता है।"

रामायण (बालकाण्ड ४६। ६ उत्तराकाण्ड) में भी शिव की हर तथा वृषभध्वज इन दो नवीन उपाधियों का उल्लेख मिलता है। महाभारत में शिव को परब्रह्म, असीम, अचिन्त्य, विश्वसृष्टा, महाभूतों का एकमात्र उद्‌गम, नित्य और अव्यक्त आदि कहा गया है। एक स्थल पर उन्हें सांख्य के नाम से अभिहित किया गया है और

अन्यत्र योगियों के परम पुरुष नाम से। वह स्वयं महायोगी हैं और आत्मा के योग तथा समस्त तपस्याओं के ज्ञाता हैं। एक स्थल पर लिखा है कि शिव को तप और भक्ति द्वारा ही पाया जा सकता है अनेक स्थलों पर विष्णु के लिये प्रयुक्त की गई योगेश्वर की उपाधि इस तथ्य का द्योतक है कि विष्णु की उपासना में भी योगाभ्यास का समावेश हो गया था, और कोई भी मत इसके वर्तमान महत्व की उपेक्षा नहीं कर सकता था। (महाभारतः द्रोण, पर्व वन पर्व)

विमलसूरि के 'पउमचरिउ' के मंगलाचरण के प्रसंग में एक जिनेन्द्र रूद्राष्टक का उल्लेख हुआ है जिसमें भगवान का रुद्र के रूप में स्तवन किया गया है और बताया गया है कि जिनेन्द्र रुद्र पाप रूपी अन्धकासुर के विनाशक हैं, काम, लोभ एवं मोहरूपी त्रिपुर के दाहक हैं, उनका शरीर तप रूपी भस्म से विभूषित है, संयमरूपी वृषभ पर वह आरूढ़ हैं, संसार रूपी करी (हाथी) को विदीर्ण करने वाले हैं, निर्मल बुद्धिरूपी चन्द्ररेखा से अलंकृत हैं, शुद्धभावरूपी कपाल से सम्पन्न हैं, व्रतरूपी स्थिर पर्वत (कैलाश) पर निवास करने वाले हैं, गुण-गुण रूपी मानव-मुण्डों के मालाधारी हैं, दस धर्मरूपी खट्वांग से युक्त हैं, तपःकीर्ति रूपी गौरी से मण्डित हैं, सात भय रूपी उद्दाम डमरू को बजानेवाले हैं, अर्थात् वह सर्वथा भीतिरहित हैं, मनोगुप्ति रूपी सर्प परिकर से वेष्टित हैं, निरन्तर सत्यवाणी रूपी विकट जटा-कलाप से मण्डित हैं तथा हुंकार मात्र से भय का विनाश करने वाले हैं।

"आचार्य वीरसेन स्वामी ने धबला टीका में अर्हन्तों का पौराणिक शिव के रूप में उल्लेख किया है और कहा है कि अर्हन्त परमेष्ठी वे हैं जिन्होंने मोह रूपी वृक्ष को जला दिया है, जो विशाल अज्ञानरूपी पारावार से उत्तीर्ण हो चुके हैं। जिन्होंने विघ्नों के समूह को नष्ट कर दिया है, जो समग्र बाधाओं से

निर्मुक्त हैं, जो अचल हैं, जिन्होंने कामदेव के प्रभाव को दलित कर दिया है, जिन्होंने त्रिपूर अर्थात् मोह, राग, द्वेष को अच्छी तरह से भस्म कर दिया है। जिन्होंने सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र रूपी त्रिशूल को धारण करके मोहरूपी अन्धकासुर के कबन्धवृन्द का हरण कर लिया है तथा जिन्होंने सम्पूर्ण आत्मरूप को प्राप्त कर लिया है।"

"महाकवि पुष्पदन्त ने भी अपने महापुराण में एक स्थल पर भगवान वृषभदेव के लिये रुद्र की ब्रह्मा-विष्णु-महेश रूपी त्रिमूर्ति से सम्बन्धित अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है। भगवान का यह एक स्तवन है जिसे उनके केवलज्ञान होने के बाद इन्द्र ने प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने भगवान के लिये कहा है कि वे शान्त हैं, शिव हैं, अहिंसक हैं, राजन्य वर्ग उनके चरणों की पूजा करता है। परोपकारी हैं, भय दूर करने वाले हैं, वामाविमुक्त हैं, मिथ्यादर्शन के विनाशक हैं, स्वयं बुद्ध रूप से सम्पन्न हैं, स्वयंभू है, सर्वज्ञ हैं, सुख तथा शान्तिकारी शंकर हैं, चन्द्रधर हैं, सूर्य हैं, रूद्र हैं, उग्र तपस्यों में अग्रगामी हैं, संसार के स्वामी हैं, तथा उसे उपशान्त करने वाले हैं, महादेव हैं........... प्रलयकाल के लिये उग्रकाल हैं, गणेश (गणधरों के स्वामी) हैं, गणपतियों (वृषभसेन आदि गणधरों) के जनक हैं, ब्रह्म हैं, ब्रह्मचारी हैं, वेदांगवादी हैं, कमलयोनि हैं, पृथ्वी का उद्धार करने वाले आदि वराह हैं, हिरण्य गर्भ हैं, परमानन्द चतुष्टय (अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख तथा अनन्त वीर्य) से सुशोभित हैं। खजुराहो के इस संस्तवन से यह प्रतीत होता है कि भगवान् वृषभदेव के रूप में शिव के त्रिमूर्ति तथा बुद्ध रूप को भी समन्वित कर लिया गया। १००० ई० के शिलालेख नम्बर ५ में शिव का एकेश्वर रूप में तथा विष्णु बुद्ध और जिन का उन्हीं के अवतारों के रूप में उल्लेख किया जाना इसी तथ्य को पुष्टि करता है।"

वैदिक परम्परा में शिव का वाहन वृषभ (बैल) बतलाया गया है। जैन मान्यतानुसार भगवान् वृषभदेव का चिन्ह बैल है। गर्भ में अवतरित होने के समय इनकी माता मरूदेवी ने स्वप्न में एक वरिष्ठ वृषभ को अपने मुख-कमल में प्रवेश करते हुए देखा था, अतः इनका नाम वृषभ रखा गया। सिन्धुघाटी में प्राप्त वृषभांकित मूर्तियुक्त मुद्राएँ तथा वैदिक युक्तियाँ भी वृषभांकित वृषभदेव के अस्तित्व की समर्थक हैं। इस प्रकार वृषभ का योग शिव तथा वृषभदेव के ऐक्य को सम्पुष्ट करता है।

जैनाचार्य हेमचन्द्र सूरि ने सोमेश्वर के शिव मन्दिर में जाकर महादेव स्त्रोत की रचना कर शिव की रागद्वेष रहित निर्विकार वीतराग सर्वज्ञदेव के रूप में स्तुति की थी। ऋषभ शिव कैसे बने इस विषय पर ईशान संहिता में लिखा है माघ वदि त्रयोदश्यादि देवो महानिशि। शिवलिंग तयोभूतः कोटिसूर्य समप्रभः।। अर्थात् माघ वदि त्रयोदशी की महानिशा को आदि देव ऋषभ करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशमान शिवलिंग के रूप में प्रकट हुए शिवपुराण में भी लिखा है "इत्थं प्रभवः ऋषभोऽवतारः शंकरस्य मे। सतां गतिर्दीनबन्धुर्नवमः कथितस्तु नः।। (शिवपुराण ४।४९)" मुझ शंकर का ऋषभ अवतार होगा। वह सज्जन लोगों की शरण और दीनबन्धु होगा तथा उसका अवतार नवां होगा।

जैन तीर्थंकरों में केवल ऋषभदेव की मूर्तियों के शिर पर कुटिल केशों का रूप दिखाया जाता है और वही उनका विशेष लक्षण भी माना जाता है। इसीलिये ऋषभदेव को केशरिया नाथ भी कहा जाता है। शिव के शिर पर भी जटाजूट कंधों पर लटकते केश ऋषभ और शिव की समानता को दर्शाते है। अतः निसन्देह रूप से यह स्वीकार किया जा सकता है कि ऋषभदेव और शिव नाम मात्र से ही

भिन्न है वास्तव में भिन्न नहीं है। इसीलिये शिव पुराण में २८ योग अवतारों में ९वां अवतार ऋषभदेव को स्वीकार किया गया है।

उत्तरवैदिक मान्यता के अनुसार जब गंगा आकाश से अवतीर्ण हुई तो दीर्घकाल तक शिवजी के जटा-जूट में भ्रमण करती रही और उसके पश्चात् वह भूतल पर अवतरित हुई। यह एक रूपक है, जिसका वास्तविक रहस्य यह है कि जब शिव अर्थात् भगवान् ऋषभदेव को असर्वज्ञदशा में जिस स्वंसवित्तिरूपी ज्ञान-गंगा की प्राप्ति हुई उसकी धारा दीर्घकाल तक उनके मस्तिष्क में प्रवाहित होती रही और उनके सर्वज्ञ होने के पश्चात् यही धारा उनकी दिव्य वाणी के मार्ग से प्रकट होकर संसार के उद्धार के लिए बाहर आई तथा इस प्रकार समस्त आर्यावर्त को पवित्र एवं आप्लावित कर दिया।

जैन भौगोलिक मान्यता में गंगानदी हिमवान् पर्वत के पद्मनामक सरोवर से निकलती है। वहां से निकलकर वह कुछ दूर तक तो ऊपर ही पूर्वदिशा की ओर बहती है, फिर दक्षिण की ओर मुड़कर जहाँ भूतल पर अवतीर्ण होती है, वहाँ पर नीचे गंगाकूट में एक विस्तृत चबूतरे पर आदि जिनेन्द्र वृषभनाथ की जटाजूट वाली अनेक वज्रमयी प्रतिमाएँ अवस्थित हैं, जिन पर हिमवान् पर्वत के ऊपर से गंगा की धारा गिरती है। विक्रम की चतुर्थ शतांब्दी के महान् जैन आचार्य यतिवृषभ ने त्रिलोकप्रज्ञप्ति में प्रस्तुत गंगावतरण का इस प्रकार वर्णन किया है :

"आदिजिणप्पडिमाओ ताओ जढ-मउढ-सेहरिल्लाओ।
पडिमोवरिम्मि गंगा अभिसित्तुमणा व सा पढदि।"

अर्थात् गंगाकूट के ऊपर जटारूप मुकुट से शोभित आदि जिनेन्द्र (वृषभनाथ भगवान्) की प्रतिमाएँ हैं। प्रतीत होता है कि उन प्रतिमाओं का अभिषेक करने की अभिलाषा से ही गंगा उनके ऊपर गिरती है।

आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने भी प्रस्तुत गंगावतरण की घटना का निम्न प्रकार चित्रण किया है :

"सिरिगिहसीसट्ठियंबुजकण्णियसिंहासणं जडामएलं।
जिणमभिसिक्खुमणा वा ओदिण्णा मत्थए गंगा।"

अर्थात् श्री देवी के गृह के शीर्ष पर स्थिति कमल की कर्णिका के ऊपर सिंहासन पर विराजमान जो जटारूप मुकुट वाली जिनमूर्ति है, उसका अभिषेक करने के लिए ही मानों गंगा उस मूर्ति के मस्तक पर हिमवान् पर्वत से अवतीर्ण हुई है।

वैदिक परम्परा में शिव को त्रिशूलधारी बतलाया गया है तथा त्रिशूलांकित शिवमूर्तियाँ भी उपलब्ध होती हैं। जैनपरम्परा में भी अर्हन्त की मूर्तियों को रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र) के प्रतीकात्मक त्रिशूलांकित त्रिशूल से सम्पन्न दिखलाया गया है। आचार्य वीरसेन ने एक गाथा में त्रिशूलांकित अर्हन्तों को नमस्कार किया है। सिन्धु उपत्यका से प्रात्य मुद्राओं पर भी कुछ ऐसे योगियों की मूर्तियाँ अंकित है, जिनके शिर पर त्रिशूल हैं और कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानावस्थित हैं, कुछ मूर्तियाँ वृषभचिन्ह से अंकित हैं। मूर्त्तियों के ये दोनों रूप महान् योगी वृषभदेव से सम्बन्धित हैं। सिके अतिरिक्त खण्डगिरि की जैन गुफाओं (ईसापूर्व द्वितीय शताब्दी) में तथा मथुरा के कुशाणकालीन जैन आयागपट्ट आदि में भी त्रिशूलचिन्ह का उल्लेख मिलता है। डा. रोठ ने इस त्रिशूल चिन्ह तथा मोहनजोदड़ो की मुद्राओं पर अंकित त्रिशूल में आत्यन्तिक सादृश्य दिखलाया है।

(ऋषभदेव तथा शिव-सम्बन्धी प्राच्य मान्यताएँ)

ऋषभदेव ने सबसे पहले क्षात्रधर्म की शिक्षा दी। महाभारत के शांतिपर्व में लिखा है कि–क्षात्रधर्म भगवान आदिनाथ से प्रवृत्त हुआ और शेष धर्म उसके पश्चात् प्रचलित हुए। यथा–

क्षात्रो धर्मो ह्यादिदेवात् प्रवृत्त;। पश्चादन्ये शेषभूताश्च धर्म्म।। (महाभारत शांतिपर्व १६।६४।२०)

ब्रह्माण्ड पुराण (२।१४) में प्रार्थिवश्रेष्ठ ऋषभदेव को सब क्षत्रियों का पूर्वज कहा है।

प्रजाओं का रक्षण क्षात्रधर्म है, अनिष्ट से रक्षा तथा जीवनीय उपायों से प्रतिपालन ये दो गुण प्रजापति ऋषभदेव में विद्यमान थे। उन्होंने स्वयं दोनों हाथों में शस्त्र धारण कर लोगों को शस्त्रविद्या सिखाई। शस्त्र शिक्षा पाने वालों को क्षत्रिय नाम भी प्रदान किया। क्षत्रिय का अन्तर्निहित भाव वही था। उन्होंने सिर्फ शास्त्र विद्या की शिक्षा ही नहीं दी अपितु सर्वप्रथम क्षत्रिय वर्ण की स्थापना भी की थी।

ऋषभदेव का यह वचन अधिक महत्वपूर्ण है कि केवल शत्रुओं और दुष्टों से युद्ध करना ही क्षात्रधर्म नहीं है अपितु विषय, वासना, तृष्णा और मोह आदि जीतना भी क्षात्रधर्म है। उन्होंने दोनों काम किये। शायद इसी कारण आज क्षत्रियों को अध्यात्म विद्या का पुरुस्कर्ता माना जाता है। जितना और जैसा युद्ध बाह्य शत्रुओं को जीतने के लिये अनिवार्य है। उससे भी अधिक मोहादि अन्तर्शत्रुओं को जीतने के लिए अनिवार्य है। ऋषभदेव ने सारी पृथ्वी-समुद्रों पर राज्य किया, सारे विश्व को व्यवस्थित किया और फिर मोहादि शत्रुओं का विनाश करने में भी विलम्ब नहीं किया। आचार्य समन्तभद्र ने नीचे लिखे श्लोक में बड़ा ही भाव-भीना वर्णन किया है—

"विहाय यः सागर-वारि-वाससं वधूमिवेमां वसुधाँ वधूं सतीम्।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकु कुलादिरात्मवान् प्रभु प्रव्राज सहिष्णुरच्युतः।।"
(स्वयंभू स्तोत्र १।३)

अर्थात्— समुद्र जल ही है किनारा जिसका (समुद्र पर्यन्त विस्तृत) ऐसी वसुधारूपी सती वधू को छोड़कर मोक्ष की इच्छा रखने वाले इक्ष्वाकुवंशीय आत्मवान् सहिष्णु और अच्युत प्रभु ने दीक्षा ले ली।

उन्होंने अपने आन्तरिक शत्रुओं को अपनी समाधि तेज से भस्म कर दिया और केवलज्ञान प्राप्त कर अचिन्त्य और तीनों लोकों की पूजा के स्थान स्वरूप अर्हत् पद प्राप्त किया। तात्पर्य यह है कि क्षत्रिय का अर्थ केवल साँसारिक विजय ही नहीं है अपितु आध्यात्मिक विजय भी है।

वे चतुर्वर्णी (क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, और ब्राह्मण) व्यवस्था के सूत्रधार बने। चाणक्य की अर्थनीति में जिस चतुर्वर्ण व्यवस्था पर अधिकाधिक बल दिया गया है, वह ऋषभदेव से प्रारंभ हो चुकी थी।

भोगभूमि के बाद कर्मभूमि के प्रारंभ में धरा और धरावासियों की आवश्यकताओं के समाधान के लिए ऋषभदेव ने जिस घोर परिश्रम का परिचय दिया वही परिश्रम आत्मविद्या के पुरस्कर्ता होने पर भी किया। वे श्रमण आर्हत् धारा के आदि प्रवर्तक कहे जाते हैं। भागवतकार ने उन्हें नाना योगचर्याओं का आचरण करने वाले कैवल्यपति की संज्ञा तो दी ही है। (भागवत ५।६।६४) तथा साथ ही उन्हें वातरशना (योगियों), श्रमणों, ऋषियों और ऊर्ध्वगामी (मोक्षगामी) मुनियों के धर्म का आदि प्रतिष्ठाता और श्रमण धर्म का प्रवर्तक माना है (भागवत ५।४।२०)

यहाँ श्रमण से अभिप्राय— **"श्राम्यति तपक्लेशं सहते इति श्रमणः"** अर्थात् जो तपश्चरण करें वे श्रमण है। श्री हरिभद्र सूरि ने दशवैकालिक की टीका में लिखा है कि— **"श्राम्यन्तीति श्रमणः तपस्यन्तीत्यर्थः।"** (१। ३) इसका अर्थ है जो श्रम करता है, कष्ट सहता है, तप करता है वह तपस्वी श्रमण है। भागवत ने वातरशना योगी, श्रमण, ऋषि को ऊर्ध्वगामी कहा है। ऊर्ध्वगमन जीव का स्वभाव है किन्तु कर्मों का भार उसे बहुत ऊंचाई तक नहीं जाने देता। जब जीव कर्मबन्धन से नितांत मुक्त हो जाता है तब अपने स्वभावानुसार लोक के अन्त तक ऊर्ध्वगमन करता है। जैसा कि

तत्त्वार्थ सूत्र में कथन है कि–**तदनन्तरमूर्ध्व गच्छत्या लोकान्तात्** (१०।५) अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के क्षय होने के बाद तुरन्त ही मुक्तजीव लोक के अन्त तक ऊंचे जाता है। जैन शास्त्रों में जहां भी मोक्षतत्त्व का वर्णन आया है वहाँ पर मुक्तजीव के ऊर्ध्वगमन का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसी संदर्भ में वैदिक ऋषियों ने वातरशना श्रमण मुनियों के ऊर्ध्वमथी, ऊर्ध्वरेता आदि शब्दों का प्रयोग जन श्रमणों के लिए ही किया है। और ऋषभदेव को इसका प्रवर्तक कहां है। अतः ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर थे यह वैदिक साहित्य भी स्वीकार करता है।

यतीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के अनुसार जो नाथ सम्प्रदाय का आरम्भ हुआ वह जैनियों के तीर्थंकर और उनके शिष्य सम्प्रदाय से हुआ। मीननाथ के गुरू थे आदिनाथ अर्थात् ऋषभनाथ।

"जैन मान्यतानुसार ज्योतिषी, गणित, व्याकरण आदि के प्रथम ज्ञाता तीर्थंकर ऋषभदेव है। इस विषय में वैद्य प्रकाश चन्द्र पाड्या ने अपने लेख 'जैन ज्योतिष की प्राचीनत्वता' में लिखा है कि "ऋग्वेद में ऋषभ का उल्लेख अनेक जगहों में आया है और उनको पूर्णतः ज्योतिषी बतलाया है।"

"प्रे होत्रे पूर्व्यव चोडग्नये भरता वृहत्।
विपी ज्योतिषी विभ्रते न वेधसे ।।५।।७।।"

ऋग्वेद मं ३ अ० १ सूत्र १०

ऋग्वेद के उक्त मंडल के आगे पीछे के अन्य सूत्रों और प्रसंग को देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ऋग्वेद की यह ऋचा ऋषभ या वृषभ के लिये रची गयी है। उन्होंने ७२ विद्याएँ सिखाई उसमें ज्योतिषी विद्या भी एक विद्या थी। इसीलिये वैदिक ऋषि वृषभ की वंदना करते हुए ऋग्वेद में लिखते है–

"आ नो गोत्रा दर्द्धहि गो पते गाः समस्मभ्यं सु नयो यंतुवाजा
दिवक्षा अति वृषभ सत्य शुष्मोडस्मभ्यं सु मघवन्बोधि गोदा : ।।२१।।"

— ऋग्वेद, मंडल ३ अ० २ सू० ३०

अर्थात् हे पृथ्वी के पालक देव। हमें नय सहित वाणियों को प्रदान कर आदरयुक्त बना। जिससे हम अपनी वृत्तियों और इन्द्रियों को संयत रख सकें। हे वृषभ तू सूर्य के समान सब दिशाओं में प्रकाशमान है और तू सत्य के कारण बलवान है। हे ऐश्वर्यमय माघवन! हमें सुबोधि प्रदान कर।

बौद्धों के धर्मकीर्ति द्वारा रचित प्रख्यात ग्रन्थ '*न्याय बिन्दु*' में जैन तीर्थंकर भगवान् ऋषभ और महावीर आदि को ज्योतिष-ज्ञान में पारगामी होने के कारण सर्वज्ञ लिखा है—

"यः सर्वज्ञ आप्तो वास ज्योतिर्ज्ञानादिकमुपदिष्टावान्। तद्यथा ऋषभ वर्धमानादिरिति।।"

"इस प्रकार जैनेतर साहित्य के अनुसार आदि ज्योतिषी भगवान् वृषभ या ऋषभ सिद्ध हो जाते हैं। जैन-पुराणों और कथाओं के आधार पर तो वे पूर्णतः ज्योतिषज्ञ हैं। जिनसेनाचार्य के "*आदि पुराण*" के अनुसार जो हालांकि वेदों से बाद की रचना है, वृषभ या ऋषभ के पुत्र भरत को एक बार रात को सोलह स्वप्न आये थे और उन स्वप्नों का जब अर्थ भरत ठीक ठीक लगाने में असमर्थ रहे, यद्यपि वे स्वयं ज्योतिर्विद थे फिर भी वे अपने बेचैनी को शांत करने के लिए पिता के पास कैलाश पर्वत पर पहुँचे और उनसे उन स्वप्नों का अर्थ समझाने की प्रार्थना की। भगवान् ऋषभदेव ने उन स्वप्नों का जो स्पष्टीकरण किया और भविष्यवाणी की वह वास्तव में स्तब्ध कर देने वाली है और यह सोचने और विचारने को बाध्य कर देने वाली है कि हजारों वर्षों पहले ही स्वप्नों के आधार पर भविष्य-वाणी भारत में होने लग गई थी। उनका वह स्वप्न-भविष्य कितना सत्य था आश्चर्य होता है।"

(जैन ज्योतिष के प्राचीनतमत्व पर संक्षिप्त विवेचन)

जैन वांङ्मय में आयुर्वेद का महत्वपूर्ण स्थान है। बारह अंगों में अन्तिम अंग दृष्टिवाद में प्राणवाय एक पूर्व माना गया है जो आज अनुपलब्ध है। स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र, नन्दीसूत्र आदि में इसका उल्लेख मिलता है। इस प्राणवाय नामक पूर्व में अष्टांगायुर्वेद का वर्णन है। जैन मत से आयुर्वेद की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पं० व्ही. पी. शास्त्री ने उग्ररादित्याचार्य कृत "कल्याणककारक" के सम्पादकीय में लिखा है कि इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में महर्षि ने प्राणावाय शास्त्र की उत्पत्ति के विषय में प्रमाणिक इतिहास लिखा हैं। ग्रन्थ के आदि में श्री आदिनाथ स्वामी को नमस्कार किया गया है। तत्पश्चात् प्राणावाय का अवतरण कैसे हुआ और उसकी स्पष्टतः जनसमाज तक परम्परा कैसे प्रचलित हुई इसका स्पष्ट रूप से वर्णन ग्रन्थ के प्रस्ताव अंश में किया गया है जो इस प्रकार है –

श्री ऋषभदेव के समवसरण में भरत चक्रवर्ती आदि भव्यों ने पहुँचकर श्री भगवन्त की सविनय वन्दना की और भगवान से निम्नलिखित प्रकार से पूछने लगे—

"ओ स्वामिन ! पहले भोग भूमि के समय मनुष्य कल्पवक्षों से उत्पन्न अनेक प्रकार के भोगोपभोग सामग्रियों से सुख भोगते थे। यहाँ भी खूब सुख भोगकर तदनन्तर स्वर्ग पहुँचकर वहाँ भी सुख भोगते थे । वहां से फिर मनुष्य भव में आकर अपने-अपने पुण्यकर्मों के अनुसार अपने-अपने इष्ट स्थानों को प्राप्त करते थे। भगवन! अब भारतवर्ष को कर्मभूमि का रूप मिला है। जो चरम शरीरी हैं व जन्म लेने वाले हैं उनको तो अब भी अपमरण नहीं है। इनको दीर्घ आयुष्य प्राप्त है। परन्तु ऐसे भी बहुत से मनुष्य पैदा होते हैं जिनकी आयु नहीं रहती और उनको वात्त, पित्त, कफादि दोनों का उद्रेक होता रहता है। उनके द्वारा कभी शीत

और कभी उष्ण व कालक्रम से मिथ्या आहार सेवन करने में आता है। जिससे अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित होते हैं। इसलिये उनके स्वास्थ्य रक्षा के लिये योग्य उपाय बतायें। इस प्रकार भरत के प्रार्थना करने पर आदिनाथ भगवान ने दिव्य-ध्वनि के द्वारा लक्षण, शरीर, शरीर के भेदों, दोषोत्पत्ति, चिकित्सा, काल भेद आदि सभी बातों का विस्तार से वर्णन किया।"

इस प्रकार दिव्यवाणी के रूप में प्रकट समस्त परमार्थ को साक्षात् गणधर ने प्राप्त किया। इसके बाद गणधर द्वारा निरूपित शास्त्र को निर्मल बुद्धि वाले मुनियों ने प्राप्त किया। इस प्रकार श्री ऋषभदेव के बाद यह शास्त्र तीर्थंकर महावीर तक चलता रहा।

दिव्यध्वनि प्रकटितं परमार्थजातं साक्षातथा गणधरोऽधिजगे समस्तम्।
पश्चात् गणाधिपते निरूपित वाक्यप्रपंचमष्टाधी निर्मलधियों मुनयोऽधिजग्मुः।।
एवंजिना ंतर निबन्धनसिद्धमार्गादायातमापतमनाकुलमर्थगाढम्।
स्वायंभुवं सकलमेव सनातनं तत् साक्षाच्छुतश्रुतदलैः श्रुत केवलीभ्यः।।

स्पष्ट है कि तीर्थंकरों ने प्राणवाय परम्परा का ज्ञान प्रतिपादित किया। फिर गणधरों प्रतिगणधरों, श्रुतकेवलियों, मुनियों ने सुनकर प्राप्त किया। (जैन आयुर्वेद - एक परिचय - अर्हत वचन, वर्ष - १२, अंक -३)

'व्रात्य' 'प्रजापति' 'परमेष्ठी', 'पिता' और 'पितामह' है। विश्व व्रात्य का अनुसरण करता है। श्रद्धा से जनता का हृदय अभिभूत हो जाता है। व्रात्य के अनुसार श्रद्धा, यज्ञ, लोक और गौरव अनुगमन करते हैं। व्रात्य राजा हुआ। उससे राज्यधर्म का श्रीगणेश हुआ। प्रजा, बन्धुभाव, अभ्युदय और प्रजातन्त्र सभी का उसी से उदय हुआ। व्रात्य ने सभा, समिति, सेना आदि का निर्माण किया।

तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च पितामहश्चापश्च श्रद्धा च वर्ष भृत्वानुव्यवर्तयन्तः। एनं श्रद्धा गच्छति एनं यज्ञो गच्छति एनं लोको गच्छति। सोऽरज्यत् ततो राजन्योऽजायत, स विशः स बन्धूनभयघमभ्युदतिष्ठित्।।

इन शब्दों द्वारा भगवान् ऋषभदेव का प्रारम्भिक परिचय दिया गया है। कृषि, मसि, असि, कर्मयोग का व्याख्यान व्रात्य ने दिया। अयोध्या पूर्व की राजधानी है और ऋषभदेव की जन्मभूमि। फिर ऋषभदेव के सन्यास, तप, विज्ञान और उपदेश सभी का यथाक्रम वर्णन है। व्रात्य ने तप से आत्म-साक्षात्कार किया। सुवर्णमय तेजस्वी आत्मा का लाभ प्राप्त कर व्रात्य महादेव बन गये। (य महादेवोऽभूत)। व्रात्य पूर्व की ओर गये, पश्चिम की ओर गये, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं की ओर उन्मुख हुए। चारों ओर उनके ज्ञान, विज्ञान का आलोक फैला। विश्व श्रद्धा के साथ उनके सामने नत मस्तक हो गया।

स्वयं ऋग्वेद में भगवान ऋषभदेव से प्रार्थना की गई है : **"आदित्य त्वमसि आदित्य सद् आसीत् अस्तभ्रादधां वृषभो अंतरिक्षं जमिते वरिमागम पृथिका आसीत विश्व भुवनानि सम्राट् विश्वेतानि वरुणस्य वचनानि"** (ऋग्वेद ३०, अ. ३) "अर्थात् हे ऋषभदेव! सम्राट्! संसार में जगतरक्षक व्रतों का प्रचार करो। तुम ही इस अखण्ड पृथ्वी के आदित्य सूर्य हो, तुम्हीं त्वचा और साररूप हो, तुम्हीं विश्वभूषण हो और तुम्हीं ने अपने दिव्यज्ञान से आकाश को नापा है।"

"इस मंत्र में वरुण वचन से व्रतों का संकेत किया गया है। वास्तव में व्रतों के उद्‌गाता भगवान ऋषभदेव ही थे। इस तथ्य को वेद ने ही नहीं, मनु ने भी स्वीकार किया है। यद्यपि मनुस्मृति में उन्हें वैवस्वत, सत्यप्रियव्रत, अग्निप्रभनाभि और ईक्ष्वाकु (ऋषभदेव) को छट्ठा मनु स्वीकार किया है और वेदकालीन दूसरी सूची में उन्हें वैवस्वत-वेन-घृष्णु बताया गया है। जैन आगमों में १४ मनुओं के

स्थान पर सात कुलकरों का वर्णन प्राप्त होता है और उसमें सातवें कुलकर का नाम नाभि और ऋषभदेव बताया गया है। इस प्रकार वेदों के आधार पर यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि व्रात्य सम्प्रदाय के मूल संस्थापक और भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठापक भगवान ऋषभदेव थे। कहने का सारांश इतना ही है कि ऋषभदेव ने व्रात्य धर्म, त्याग धर्म और परहंस धर्म का प्रतिपादन किया, जिसका समानार्थी अविकल और अक्षुण्ण रूप जैन धर्म है। जैनधर्म और व्रात्यधर्म दोनों पर्यायवाची है।" (इतिहास के अनावृत पृष्ठ - आचार्य सुशील मुनिजी)

विमलसूरि ने अपने पउमचरिउ में लिखा है कि मूलतः चार वंश प्रसिद्ध थे। जिनकी उत्पत्ति ऋषभदेव से हुई। ऋषभदेव ने बाल्यावस्था में इक्क्षु दंड कुतूहल से हाथ में लिया ज़िससे उनका इक्ष्वाकु वंश कहलाया। उनके पुत्र भरत से आदित्ययथा, सिंहयशा, बलभद्र, वसुबल, महाबल आदि अनेक राजा इक्ष्वाकु वंश में हुए। आदित्य दशा के नाम से आदित्य अर्थात् सूर्यवंशी कहलाये। ऋषभदेव के दूसरे पुत्र बाहुबली थे। जिनके पुत्र सोमप्रभ के नाम से सोमवंश या चंद्र वंश की उत्पत्ति हुई। ऋषभदेव के पौत्र नमी और विनमी के द्वारा विद्याधर वंश बना। ये विद्याओं से सम्पन्न थे इसलिये इन्हें विद्याधर कहा गया। विद्याधर वंशों के राजा से बचने के लिये राजा भीम ने एक महान द्वीप में लंका नगरी की स्थापना की और इस द्वीप को राक्षस द्वीप कहा गया और उसके राजा को महाराक्षस। इस वंश में मेघ वाहन हुआ जिसके पुत्र का नाम राक्षस था जो इतना पराक्रमी था कि उसके पूरे वंश को ही राक्षस नाम प्राप्त हुआ। अहमिन्द्र नामक विद्याधर राजा का श्री कण्ठ नामक पुत्र को लंका पतिकीर्तिधवल ने लवण सागर के द्वीप में बसाया। जहाँ वानरों की बहुतायत थी। अतः इस द्वीप में रहने वालों को

वानर कहा जाने लगा और उनका वंश वानर वंश कहलाया। पउमचरिउं में लिखा है कि जिस प्रकार खड्ग से खड्गधारी, घोड़े से घुड़सवार, हाथी से हस्तिपाल, ईक्षु से ईक्ष्वाकु, विद्या से विद्याधर वंश होता है उसी तरह वानरों के चिन्ह से वानरों का वंश अभिव्यक्त होता है। चूँकि वानर के चिन्ह से लोगों ने छत्र आदि अंकित किये थे इसलिए वे विद्याधर वानर कहलाए। इस प्रकार ऋषभदेव से इक्षवाकू वंश, सूर्य वंश, चन्द्रवंश और विद्याधर वंश जिसके अन्तर्गत राक्षस और वानर वंश की उत्पत्ति हुई।

ऋषभ का अर्थ 'श्रेष्ठ' होता है। 'ऋषि गती' धातु से ऋषभ का अर्थ गतिशील भी है। ऋषभदेव वस्तुतः प्रत्येक कुशल कर्म के विकास पथ पर गतिशील रहे, अग्रणी रहे, श्रेष्ठ रहे। ऋषभ शब्द गंभीर, स्पष्ट एवं मधुर नाद का वाचक भी है जो सप्तस्वरों में से एक है। ऋषभ का एक महत्वपूर्ण अर्थ ज्ञाता दृष्टा भी है। ऋ का अर्थ आया हुआ, ष का अर्थ श्रेष्ठ तथा भ का अर्थ है ग्रह या नक्षत्र। अतः ऋषभ का अर्थ हुआ श्रेष्ठ नक्षत्रों में आया हुआ। जैन पुराण के अनुसार ऋषभदेव के दायें जंघा में बैल का चिन्ह होने से उनका वृषभ नाम भी व्यवहारित हुआ।

"उत्तराध्ययन २५ श्लोक ६ में काश्यप को धर्म का आदि प्रवर्तक बताया गया है। भगवान ऋषभ आदि काश्यप है उन्हें धर्म की अनेक धाराओं के आदि स्रोत के रूप में खोजा जा सकता है। यह विषय अभी तक अज्ञात रहा है। इस विषय में अनुसंधान आवश्यक है। (आचार्य महाप्रज्ञ जी)

भगवान ऋषभदेव ने चैत्यकृष्णा अष्टमी के दिन चंद्र के उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के साथ योग होने पर अपराह्न काल में दीक्षा ग्रहण की थी। हेमचन्द्राचार्य ने इस विषय में लिखा है —

तदा चं चैत्रबहुलाष्टम्यां चन्द्रमसिश्रिते।
नक्षत्र मुत्तराषाढ़ा महो भागेऽथ पश्चिमे।।६५।।

ऋषभदेव की तक्षशिला यात्रा का वर्णन जैन साहित्य में मिलता है जिनदत्त सूरि रचित पंचानन्द पूजा, आवश्यक नियुक्ति आदि ग्रन्थों में इस विषय पर प्रकाश डाला गया है। तक्षशिला में ऋषभदेव के पुत्र बाहुबलि का राज्य था। वहाँ पर ऋषभदेव गये थे। इसका वर्णन पी. सी. दास गुप्ता ने अपने लेख 'On Rishabha's visit To Taxila', में किया है। उनके अनुसार The legend of Risabhanatha's journey to Taksasila to meet his son Bahubali is indeed incomparable in its glory and significance. In his *Studies in Jaina Art* (Banaras, 1955) Umakant P. Shah has sumed up the story as follows :

"It is said that when Risabha went to Taxila, he reached after dusk; Bahubali (ruling at Taksasila) thought of going to pay his homage next morning and pay due respects along with his big retinue. But the Lord went away and from here, travelled through Bahali-adambailla, Yonaka and preached to the people of Bahali, and to Yonakas and Pahlagas, Then he went to Astapada and after several years came to Purimatala near Vinita, where he obtained Kevalajnana." According to U.P. Shah the relevant verses show that Taksasila was probably included in the province of Bahali (Balkh-Bactria) in the age of Avasyaka Niryukti. As regards Risabha's visit it is told that next morning when Bahubali came to know of the Master's departure he "felt disappointed and satisfied himself only by worshipping the spot where the Lord stood and installing an emblem-the dharmacakra---over it."

क्रमशः

तित्थयर वर्ष २८
अप्रैल २००४ से मार्च २००५

निबन्ध

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	नैतिक उपयोगितावाद महावीर दर्शन के आलोक में-	डॉ. लता बोथरा	५
२.	तेजसकाय के जीव	डॉ. जीवराज जैन	२१
३.	अग्निकाय की विद्युत से तुलना	डॉ. जीवराज जैन	५८
४.	पुरुलिया के पुरातत्व	श्री सुभाष राय	६३
५.	तेजसकाय के बारे में उठाये जाने वाले प्रश्नों का खुलासा	डॉ. जीवराज जैन	१०९
६.	करुण हत्या	डॉ. जीवराज जैन	११५
७.	बान्दा का देवालय	श्री सुभाष राय	१२६
८.	संवेगरंग शाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि	साध्वी प्रियदिवांजना श्री जी	१६१
९.	समाधि मरण	डॉ. जीवराज जैन	१६७
१०.	पाड़ा का देवालय	श्री सुभाष राय	१७९
११.	उमास्वाति एवं उनकी उच्चैनागर शाखा का जन्म स्थल	डॉ. सागरमल जैन	२१३

१२. अहिंसा और वैराग्य का प्रतीक गिरनार	श्री सुरेन्द्र चन्द जैन	२३४
१३. साबूदाना क्या खा रहे है आप	श्री सुरेन्द्रचन्द जैन	२३६
१४. क्षमा की शीतल धारा	मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज	२६५, ३१६
१५. उमास्वाति और उनकी परम्परा	डॉ. सागरमल जैन	२७५
१६. प्राकृत एवं अपभ्रंश जैन साहित्य में कृष्ण	डॉ. सागलमल जैन	३२९
१७. भक्ति की अवधारणा	डॉ. लता बोथरा	३६९
१८. हिन्दुओं के आराध्य भ. महावीर	स्व. श्री परिपूर्णानन्द वर्मा	३७२
१९. नमस्कार माहात्मय	पं. काशीनाथ जैन	३७७, ४२९
२०. जिनप्रतिमा का प्राचीन स्वरूप	प्रो. सागरमल जैन	४२१
२१. निर्ग्रन्थ-संघ और श्रमण परम्परा	साध्वी विजय श्री आर्या	४७३
२२. काकन्दी नगरी		४७८
२३. जैसलमेर की अनमोल निधि	कुन्दन लाल जैन	४८५
२४. व्याप्त व्यक्तित्वः अखण्ड कृतित्व	डॉ. लता बोथरा	

कथानक :

१. श्रीचन्द्र राज चरित्र — २८, ७२, १३१, १६१, १८३, २२५, २८४

२. वैर का विपाक — ३८८, ४३८, ४८९

संकलन — २३९, २९२, ३४५, ३९८, ४४७

पुस्तक समीक्षा — **२४१**

कविता :

५. यशोदा का त्याग — २८२

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar, Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Şarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2215-0523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

- Anusandhan
- Kolkata Nasta
- Badsha Khan
- Picnic
- Raja
- Shubham
- Bhaonagari Ghantia
- Jocker
- Lajawab
- Papri Ghantia
- Rim Jhim
- Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread) .

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer

From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT

1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016

PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482

CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN

FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. No.12 TITTHAYARA March 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225